

प्रथमः पाठः



सुभाषितानि

['सुभाषित' शब्द 'सु + भाषित' इन दो शब्दों के मेल से सम्पन्न होता है। सु का अर्थ सुन्दर, मधुर तथा भाषित का अर्थ वचन है। इस तरह सुभाषित का अर्थ सुन्दर/मधुर वचन है। प्रस्तुत पाठ में सूक्तिमञ्जरी, नीतिशतकम्, मनुस्मृति:, शिशुपालवधम्, पञ्चतन्त्रम् से रोचक और विचारपरक श्लोकों को संगृहीत किया गया है।]

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।

सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति नद्यः

समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेया: ।।।।।

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः। तृणं न खादत्रपि जीवमानः

तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥२॥

लुब्धस्य नश्यति यशः पिशुनस्य मैत्री नष्टक्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्मः। विद्याफलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य ॥३॥ पीत्वा रसं तु कटुकं मधुरं समानं माधुर्यमेव जनयेन्मधुमिक्षकासौ। सन्तस्तथैव समसज्जनदुर्जनानां श्रुत्वा वच: मधुरसूक्तरसं सुजन्ति ॥४॥

विहाय पौरुषं यो हि दैवमेवावलम्बते । प्रासादसिंहवत् तस्य मूर्ध्नि तिष्ठन्ति वायसा: ॥५॥

> पुष्पपत्रफलच्छायामूलवल्कलदारुभि: । धन्या महीरुहा: येषां विमुखं यान्ति नार्थिन: ।।६।।

चिन्तनीया हि विपदाम् आदावेव प्रतिक्रिया: । न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते विह्नना गृहे ।।७।।



गुणज्ञेषु गुणियों में सुस्वादुतोया: स्वादिष्ट जल निकलती हैं/उत्पन्न होती हैं प्रभवन्ति समुद्रमासाद्य (समुद्रम्+आसाद्य) समुद्र में मिलकर/पहुँचकर पीने योग्य नहीं होती भवन्त्यपेयाः (भवन्ति+अपेयाः) सींग के बिना विषाणहीनः खादन्नि (खादन्+अपि) खाते हुए भी जीवमानः जिन्दा रहता हुआ चुगलखोर/चुगली करने वाले की पिशुनस्य व्यसनिन: बुरी लत वाले की राजा का/के/की **नराधिपस्य** (नर+अधिपस्य)

जनयेन्मधुमक्षिकासौ

(जनयेत्+मधुमिक्षका+असौ)

सन्तस्तथैव (सन्त:+तथा+एव)

सृजन्ति

वायसाः

वल्कल

दारुभि:

महीरुहाः

कूपखननं

वह्निना

- यह मधुमक्खी पैदा करती/ निर्माण करती है

वैसे ही सज्जन

निर्माण करते हैं

कौए

पेड़ की छाल

लकड़ियों द्वारा

वृक्ष

- कुआं खोदना

अग्नि द्वारा

अभ्यास:



1. पाठे दत्तानां पद्यानां सस्वरवाचनं कुरुत।

2. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-

- (क) समुद्रमासाद्य
- (ख) "" वच: मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।
- (ग) तद्भागधेयं पशूनाम्।
- (घ) विद्याफलं कृपणस्य सौख्यम्।
- (ङ) पौरुषं विहाय य: अवलम्बते।
- (च) चिन्तनीया हि विपदाम्प्रितिक्रिया:।

3. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

- (क) व्यसनिनः किं नश्यति?
- (ख) कस्य यश: नश्यति?
- (ग) मधुमक्षिका किं जनयति?



	(घ) मधुरसूक्तरसं के सृजन्ति? (ङ) अर्थिन: केभ्य: विमुखा न यान्ति?							
4.	अधोलिखित-तद्भव-शब्दानां कृते पाठात् चित्वा संस्कृतपदानि लिखत-							
	यथा- कंजूस	कृपण:						
	कड्वा	***********	•••••					
	पूँछ पूँछ	*******	••••					
	लोभी	*********	••••					
	मधुमक्खी	***********	••••					
	तिनका	***************************************	••••					
_	अधोलिखितेषु वाक्येषु	कर्नावं क्रियाप्तवं	ਤ ਤਿਕਾ ਕਿ					
5.		कतृपद ।क्रायापद						
	वाक्यानि		कर्ता	क्रिया				
	यथा-सन्तः मधुरसूक्तरस	-	सन्त:	सृजन्ति				
	(क) निर्गुणं प्राप्य भवि			******				
	(ख) गुणज्ञेषु गुणाः भव		<u> </u>	***************************************				
	(ग) मधुमिक्षका माधुर्यं	जनयेत्।	***************************************	*************				
	(घ) पिशुनस्य मैत्री यश	ाः नाशयति।	***************************************	***************************************				
	(ङ) नद्य: समुद्रमासाद्य	अपेया: भवन्ति।	******	•••••				
6.	रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत- (क) गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।							
	(ख) <u>नद्यः</u> सुस्वादुतोयाः भवन्ति।							
	(ग) लुब्धस्य यशः नश्यति।							
	(घ) मधुमिक्षका माधुर्यग							
	(ङ) तस्य मूर्ध्नि तिष्ठि							
7.	उदाहरणानुसारं पदानि							
•	यथा-समुद्रमासाद्य	- समुद्रम्	+ आर	पारा				
	पदा रागुप्रगाराव	(1.38.1	7 311	A TOP OF THE PROPERTY OF THE P				
				रुचिरा				
(4			सावरा				

माधुर्यमेव	_	•••••	+	**********
अल्पमेव	_	•••••	+	************
सर्वमेव	_		+	•••••
दैवमेव	_	•••••	+	•••••
महात्मनामुक्ति:	_	•••••	+	***************************************
विपदामादावेव	_	•••••	+	***********

योग्यता-विस्तारः

प्रस्तुत पाठ में महापुरुषों की प्रकृति, गुणियों की प्रशंसा, सज्जनों की वाणी, साहित्य-संगीत-कला की महत्ता, चुगलखोरों की दोस्ती से होने वाली हानि, स्त्रियों के प्रसन्न रहने में सबकी खुशहाली को आलङ्कारिक भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

पाठ के श्लोकों के समान अन्य सुभाषितों को भी स्मरण रखें तथा जीवन में उनकी उपादेयता/संगति पर विचार करें।

(क) येषां न विद्या न तपो न दानं

ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।

ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः

मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

- (ख) गुणा: पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वय:।
- (ग) न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।
- (घ) दुर्जन: परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्।
- (ङ) न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्।
- (च) उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तङ्गते तथा (उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च)। सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।।

उपर्युक्त सुभाषितों के अंशों को पढ़कर स्वयं समझने का प्रयत्न करें तथा संस्कृत एवं अन्य भारतीय-भाषाओं के सुभाषितों का संग्रह करें।

'गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति'—इस पंक्ति में विसर्ग सिन्ध के नियम में 'गुणाः' के विसर्ग का दोनों बार लोप हुआ है। सिन्ध के बिना पंक्ति 'गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति' होगी।

